आईआईएम का दीक्षांत समारोह: ये पैरों से नहीं, हौसलों से चला करते हैं...

आर्चिशा चल नहीं सकतीं, सम्मान में खड़े हुए गेस्ट, फैकल्टी व स्टूडेंट, बजती रहीं तालियां

आईआईएम में पहली बार दिया गया लेटर ऑफ एप्रिशिएशन

पत्रिका ह्यूमन एंगल

अनुराग सिंह
patrika.com

रायपुर. आईआईएम के दीक्षांत समारोह में उस समय तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा जब आर्चिशा महांती का नाम पुकारा गया। आर्चिशा चल नहीं सकती, वे हमेशा व्हील चेयर पर ही रहती हैं, लेकिन अपने हौसले से बैच के प्लेसमेंट में 33 लाख का हाईएस्ट पैकेज हासिल किया। उसके स्टेज में पहुंचते ही गेस्ट-फैकल्टी के साथ सभी स्टूडेंट्स और उनके पैरेंट्स खड़े हो गए और काफी देर तक उसके सम्मान में तालियां बजाने लगे। आर्चिशा की मेहनत, लगन को देखते हुए समारोह में आर्चिशा को लेटर ऑफ सर्टिफिकेट दिया गया। आईआईएम के दीक्षांत समारोह के इतिहास में किसी भी स्टूडेंट्स को लेटर ऑफ एप्रिशिएशन नहीं दिया गया। पहली बार आर्चिशा को यह सम्मान दिया गया। पढ़ाई को पूरा कराने पूरे समय व्हील चेयर का सहारा उनके पिता सुकांत कुमार महांती रहे।

14 साल की उम्र से व्हीलचेयर पर: पापा सुकांत कुमार महांती ने बताया कि आर्चिशा खुद से नहीं चल सकती। बचपन में आर्चिशा चलते-चलते गिर जाती थी। जब आर्चिशा 14 साल की थी तब वो चलते-चलते गिरी और उठ ही नहीं सकी। डॉक्टर्स ने बताया कि आर्चिशा को लिंब गर्डल मस्कूलर डिस्ट्राफी की समस्या है। उसके बाद से आर्चिशा व्हील चेयर पर ही रहती है। मैं ओडिशा में 2023 में रिटायर हुआ। उसके बाद इसकी पढ़ाई कराने मैं पूरे परिवार के साथ रायपुर आ गया। हर रोज मैं आर्चिशा के साथ कॉलेज आता हूं।

साइंस में पढ़ना था पर नहीं हुआ, सब्जेक्ट बदला और गोल्ड मिला

आर्चिशा ने बताया कि मैं साइंस की पढ़ाई करना चाहती थीं। मैंने साइंस से ही ग्रेजुएशन करने के लिए कॉलेज में एडमिशन लिया था, लेकिन अपनी स्थिति के कारण प्रैक्टिकल नहीं हो पाया। जिसके कारण नंबर भी अच्छे नहीं आए। उसके बाद मैंने जगदलपुर से ही आर्ट्स में ही ग्रेजुएशन किया और वहां बस्तर यूनिवर्सिटी में गोल्ड मेडलिस्ट रही। उसके बाद मैंने कैट का एग्जाम दिया और मेरा आईआईएम में एमबीए के लिए सलेक्शन हो गया।

पूरे समय कैम्पस में साथ रहे पापा

आर्चिशा ने बताया कि मेरा एडमिशन होने के बाद से पापा हर समय मेरे साथ ही रहे। कॉलेज में एक क्लास से दूसरे क्लास जाना हो या लाइब्रेरी जाना हो। वे हर मोड़ पर मेरा साथ देने खड़े रहते थे। मेरा फिजियोथैरेपी भी होता तो पापा साथ रहते, वही सब करवाते थे। करीब 6 माह पहले मेरे पैर में दिक्कत हो गई थी, लेकिन मैंने पढ़ाई बंद नहीं की। घर से ही ऑनलाइन क्लासेस ली और पढ़ाई पूरी की।

Patrika, 16 April 2025, p.02.jpg